बाबा मुक्तानन्द की समयातीत सिखावनियाँ

"हरेक व्यक्ति के हृदय में शान्ति का महासागर है।"

~ बाबा मुक्तानन्द

ऑस्कर फ़िगरोआ द्वारा लिखित व्याख्या

महासागर में एक लुभावनी, बल्कि सम्मोहित-सी कर लेने वाली शक्ति है—यह उग्र व गरजती हुई अथाह जलराशि कितनी जीवन्त है जिसमें से लहरें निरन्तर उठती और विलीन होती रहती हैं। प्रकृति के इस चमत्कार को देखकर हर कोई सम्मान और सराहना के भाव से भर ही जाता है। फिर भी, असली अचम्भा तो शायद निरन्तर उठती-गिरती इन प्रचण्ड लहरों के तले मौजूद है : महासागर की गहराइयों में बसी परमशान्ति। उपनिषदों[१] में मिलने वाली यह उत्कृष्ट उपमा देकर और इसे हममें से हरेक के साथ जोड़कर, बाबा मुक्तानन्द हमें यह याद दिलाते हैं कि जिन चीज़ों का गुण-धर्म ही उतार-चढ़ाव और अस्थिरता है, उनके केन्द्र में हमें हमेशा ही निस्तब्धता मिल सकती है। हम आत्मारूपी अविचल, गहन महासागर को हमेशा ही पा सकते हैं। बाबा जी की यह सिखावनी हमें सांसारिक जीवन की अनिश्चितताओं और हमारे बहिर्मुखी व्यक्तित्व की अनेकानेक परतों के परे जाने की राह दिखाती है, ताकि हम परम विश्रान्ति की उस स्थिति को पा सकें जो हमारा सत्य स्वरूप है। सिद्धयोग अभ्यासों के कोमल और शक्तिपूरित सम्बल से, बाबा जी के वचन हमें उस शान्ति में अवस्थित होने की दिशा में ले जा सकते हैं जो हमारा सहज-स्वाभाविक घर है।

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] देखें, उदाहरणार्थ, छान्दोग्योपनिषद् ६.१०।